सत्ता के मीठे आम को पचाने की चुनौती

आलोक मेहता

तेज गर्मी के बाद पके हुए आम बहुत आकर्षक और मीठे होते हैं। गुजरात से मध्यप्रदेश तक आम के रस, आम पाक, आम का रायता, आम मिश्रित श्रीखंड जैसे व्यंजनों की भरमार रहती है। बचपन में पारिवारिक बगीचे से बैलगाड़ियों में भरे हुए आम आने पर सुबह-शाम चूसने वाले आम खाने, भोजन में चावल के साथ आम का रस ढेर सारा पीने के बाद भी इच्छा नहीं भरती थी। तब दादाजी समझाते थे - 'आम का पेड़ लगाने और पकाने में बड़ी मेहनत-तपस्या लगती है। आम के पेड़ का रख-रखाव और पहरेदारी करनी होती है और आम कितना ही मीठा हो, उसे पचाने की क्षमता भी अच्छी होनी चाहिए।'

नरेन्द्र भाई मोदी के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी की थाली में सत्ता का मीठा आम जरूर जनता ने परोस दिया है। इतनी बड़ी लोकप्रियता के साथ 1977 में मोरारजी देसाई या 1989 में विश्वनाथ प्रताप सिंह या 1996 99 में अटल बिहारी वाजपेयी भी नहीं आए थे। इसलिए नरेन्द्र मोदी और भाजपा को सत्ता के अपने फलदार पेड़ को बंदरों और पत्थरों से बचाते हुए रख-रखाव करना होगा और स्वादिष्ट फल को पचाते हुए देश को भी मजबूत करने की चुनौती स्वीकारनी होगी। दूसरी तरफ लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए राष्ट्रीय पार्टी के नाते कांग्रेस को अधिक जिम्मेदारी के साथ प्रतिपक्ष की भूमिका निभाते हुए मुरझाए पेड़ की तरह हो चुके संगठनात्मक ढांचे को ठीक करने की चुनौती स्वीकारनी होगी।

निश्चित रूप से भारतीय लोकतंत्र का यह ऐतिहासिक लोक सभा चुनाव था। नरेन्द्र मोदी ने जिस ढंग से पिछले दो-तीन वर्षों के दौरान इस चुनावी रणभूमि के लिए नक्शा तैयार कर रखा था, उसे उनकी पार्टी का एक वर्ग या प्रतिपक्ष 'व्यक्तिवादी' और अमेरिकी राष्ट्रपति चुनावी शैली को बताकर आलोचना कर सकता है। लेकिन इसे अनुचित कैसे कहा जा सकता है। भाजपा के अन्य वरिष्ठ नेता भी तो पिछले 10 वर्षों में ऐसी तैयारी कर सकते थे। कांग्रेस पार्टी के शीर्ष नेताओं को भी पिछले दो-तीन वर्षों में तैयारी करने से किसने रोका था? मनमोहन सिंह सरकार की योजनाओं के दावों को क्रियान्वित करने तथा सफलता जनता के गले उतारने से किसने रोका था? लगभग 10 वर्ष पूरा होने से चार महीने पहले पल्ला झाड़कर सलामी लेने वाले मनमोहन सिंह को अपनी गलतियां स्वीकारने में क्यों संकोच होता है? सत्ता सुख के साथ पाप में भागीदारी से शीर्ष नेता कैसे इंकार कर सकते हैं? कंपनी का मुख्य कार्यकारी अधिकारी हो अथवा किसी मीडिया संस्थान का संपादक, गड़बड़ी होने या मानहानि का मुकदमा होने पर क्या पल्ला झाड़कर जिम्मेदारी से बच सकता है।

कांग्रेस अब अपना घर ठीक करती रहेगी। लेकिन भाजपा को अपना घर परिवार ही नहीं देश-दुनिया की अधिक परवाह करनी होगी। बड़ी सफलता के साथ जन अपेक्षाओं को समय रहते पूरी करना और सत्ता के साथ जल्द चिपक सकने वाली कालिख न लगने देना मोदी के लिए असली चुनौती होगी। भाजपा ने चुनाव के दौरान लंबे चौड़े वायदे किए हैं। उसने स्वयं देश की आर्थिक हालत खराब होने की बातें कही हैं। महंगाई और भ्रष्टाचार से निजात दिलाने का संकल्प व्यक्त किया है। औद्योगिक विकास के साथ बेरोजगारी दूर करने का काम जादुई चिराग से पूरा नहीं किया जा सकता। बड़े पैमाने पर पूंजी निवेश के लिए स्वदेशी उद्यमियों के साथ विदेशी पूंजी की जरूरत होगी। ऐसी स्थिति में भाजपा-संघ की विचारधारा या किसानों तथा वन क्षेत्रों के हितों से सवाल भी तेज हो सकते हैं।

आर्थिक विकास में चीन से मुकाबला करने की इच्छा व्यक्त की जा सकती है, लेकिन एकछत्र 'कम्युनिस्ट राज' की तरह बुलडोजर चलाकर फैसले मनवाना क्या भारतीय व्यवस्था में संभव होगा? भारत के आधुनिक आर्थिक विकास के साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सामाजिक-सांस्कृतिक दिशा-निर्देशों को भी निभाना कितना आसान होगा?

संघ के कुछ नेता और भाजपा के कुछ उम्मीदवारों ने चुनाव के दौरान अयोध्या मंदिर निर्माण, जम्मू-कश्मीर में धारा-370 हटाने तथा समान नागरिक संहिता लागू करने का विश्वास अपने मतदाताओं को दिला रखा है। इसके लिए भाजपा का लोकसभा में बहुमत पाना पर्याप्त नहीं है। राज्यसभा में अभी कांग्रेस सहित प्रतिपक्ष का पलड़ा भारी रहने पर एक बार फिर नई सरकार को हर विधेयक तथा कानूनों में क्रांतिकारी बदलाव के लिए बड़े विरोध का सामना करना पड़ेगा। प्रतिपक्ष में रहते हुए पिछले दो वर्षों में भाजपा ने सरकार को नाक में दम कर दिया था। चुनावी तूफान में निकले जहर का असर क्या जल्द खत्म हो पाएगा? भारत की संघीय व्यवस्था की दुहाई भाजपा स्वयं देती रही है। अब कई राज्यों में गैर भाजपा राजनीतिक दल सत्ता में हैं।

केरल, जम्मू-कश्मीर, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, असम तथा पूर्वोत्तर राज्यों की सरकारों के साथ अच्छा सामंजस्य तथा उन प्रदेशों की समस्याओं के समाधान में केंद्र का समुचित सहयोग देना जरूरी होगा। आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से विभिन्न राज्यों में फैली माओवादी हिंसक गतिविधियों से कड़ाई के साथ निपटने के लिए दस वर्षों में भाजपा ने बहुत तर्क दिए हैं। अब उन्हीं दलीलों को क्रियान्वित करना तथा माओवादियों को कुचलने के लिए नई सरकार क्या सेना का भी उपयोग कर सकेगी? अल्पसंख्यकों और आदिवासियों के हितों की रक्षा करने के लिए संतुलित नीति की आवश्यकता होगी। इस दृष्टि से रेगिस्तानी गर्मी, समुद्री खारेपन, पिघलते बर्फीले पहाड़ जैसी समस्याएं और अपेक्षाएं सत्ता के सामने रहने वाली हैं। आशावादी दृष्टिकोण के साथ नई व्यवस्था और भारतीय समाज को शुभकामनाएं देना ही उचित है। ■

alokmehta7@hotmail.com